राष्ट्रनिर्माते

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

आजादी का
अमृत महोत्सव

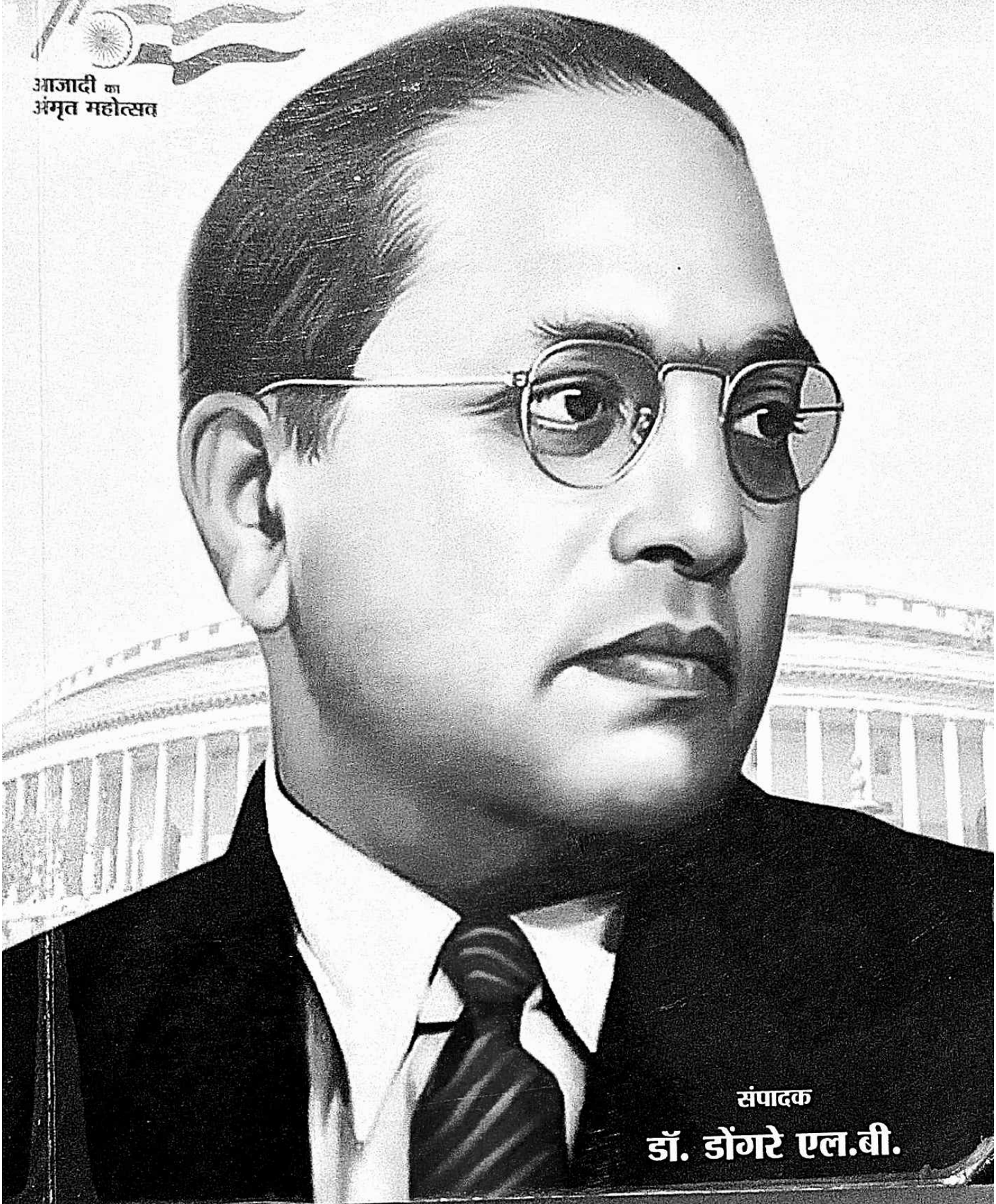

संपादक
डॉ. डोंगरे एल.बी.

राष्ट्रनिर्माते

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

संपादक

डॉ. डोंगरे लक्ष्मण भीमराव

शिवानी प्रकाशन, पुणे

राष्ट्रनिर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

संपादक - डॉ. लक्ष्मण भीमराव डोंगरे

सर्व हक्क :
संपादक डॉ. लक्ष्मण भीमराव डोंगरे

प्रथम आवृत्ती :
१ जानेवारी २०२२

प्रकाशक
विजय टेकवार
शिवानी प्रकाशन
माळवाडी हडपसर, पुणे

अक्षर जुळवणी व मुखपृष्ठ
संतोष जाधव
ओम ग्राफिक्स,
संभाजी चौक सिडको नविन नांदेड

मुद्रण स्थळ
आर्टी ऑफसेट, लातूर

किंमत - १९०/-
ISBN – 978-93-85426-68-1

अनुक्रमणिका

१) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे मुल्यगर्भ शैक्षणिक विचार 8
डॉ अर्जुन गंगाराम नेरकर

२) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादी आर्थिक विचार 13
प्रा.डॉ. उत्तम अप्पासाहेब पठारे

३) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजीक समतेचे विचार 17
प्रा. संतोष सुखदेव ठाकरे

४) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्रीमुक्तीवादी विचार 26
प्रा.एस.पी. उमरीवाड

५) डॉ बाबासहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना 34
प्रा. कौसल्ये एस.जी.

६) भारतीय राज्यघटना आणि डॉ बाबासाहेब आंबेडकर 43
प्रा. अर्जुन मोरे

७) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे लोकशाही संबंधीचे विचार 48
प्रा.आनेराव एम.एम.

८) शेतकऱ्यांचे हितकरी - डॉ बाबासाहेब आंबेडकर 53
डॉ विजयकुमार बाबळे

९) डॉ बाबासाहेब औडकर भारतीय संवीधानाचे शिल्पकार 57
डॉ पी.एस.लोखंडे

१०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार... 62
प्रा. लक्ष्मण एस. पवार

११) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक विचार - **प्रा. डॉ. मनोहर कुंडलिक थोरात** 75

१२) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार 82
बोंबले राजू बालासाहेब

१३) डॉ. आंबेडकरांचे सामाजिक लोकशाहीसंबंधी विचार 91
प्रा.डॉ. माधव केरबा वाघमारे

१४) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे परराष्ट्र धोरण एक विश्लेषण 95
प्रा. डॉ. डोंगरे एल.वी.

१५) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे धर्मविषयक विचार आणि धर्मांतर 104
डॉ. डी. के. कदम

१६) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक न्याय विषयक दृष्टीकोणाचा विश्लेषणात्मक अभ्यास-**डॉ. सुनिल नाना संदानशिव** 113

१७) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची हैदराबाद स्वातंत्र्य लढ्यातील भूमिका आणि योगदान - **प्रा.डॉ. वसंत कदम** 120

१८) मला भावलेले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर 131
कांबळे विकास यशवंता

१९) आंबेडकर चळवळ आणि दलित स्त्रियांचे मानावाधिकार 143
छाया भिमराव उमरे

२०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार 150
महेश गजेंद्र रंदिल

२१) भारतीय शिक्षा मे आंबेडकर जी का योगदान 156
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

२२) डॉ. बाबासाहेब आबेडकर का लोकतांत्रिक चिंतन 166
डॉ. शिवाजी नागोवा भदरगे

२३) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों मे राष्ट्रहित 170
प्रा. कैलास काशिनाथ वच्छाव

24) Why Caste Matters in India? 175
Mr. Swapnil Alhat

25) The Role of Hindu Code Bill in the Empowerment of Women in India - **Dr. Ingole Ramesh Jankiram** 180

26) Dr. Babasaheb Ambedkar's Idea of Democratic Society 189
Mr. Keda N. Wagh

27) IMPORTANCE OF THE PERSPECTIVE OF DR. BABASAHEB AMBEDKAR TOWARDS BRAHMINS AND BRAHMANISM, IN TODAYS CONTEXT: A NEED OF HOUR FOR THE CONSERVATION OF SOCIAL ENVIRONMENT IN INDIA 192
Dr. Krishnanand Patil

28) Dr.BabasahebAmbedkar's Views on Problem of Small Land Holdings in India and Remedies - **H. P. Wangarwar,** 205

29) Reflection of caste-system in Indian society in Dr. Babasaheb Ambedkar's works - **Mr. Mupade Parmeshwar Tukaram** 212

30) "Dr. Babasaheb Ambedkar's Contribution to Indian Economy" 219
Dr. Ingle Sangapal Prakash

21) "भारतीय शिक्षा में आंबेडकर जी का योगदान"

डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभाग प्रमुख
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जी ने केवल अनुसूचित समाज की शिक्षा पर ही बल नही दिया अपितु प्रत्येक वर्ग के सभी महिला व पुरूषों को समान रूप से शिक्षा मिले. इस पर उनके विचार एकदम स्पष्ट थे। उनका मानना था कि सरकार सभी के लिए शिक्षा सस्ती व सुलभ उपलब्ध कराए। प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयी तक की शिक्षा सरकार को सहज उपलब्ध करवानी चाहिए।

शिक्षा के ज्ञान का तीसरा नेत्र भी कहा जाता है। शिक्षा वह यंत्र है, जिससे मनुष्य समाज का मुक्ति द्वार खोल देती है। शिक्षा से व्यक्ति के आंतरीक और बाह्य गुणों का विकास होता है, शिक्षा मनुष्य को नर से नारायण बनाने में अग्रसर होती है। हमारे अंदर की प्रतिभा को शिक्षा के द्वारा ही निखारा जा सकता है। बाबा साहब आंबेडकरजी ने शिक्षा को शेरनी का दूध कहा है। वह जो पियेगा वह दहाड बिना नही रहा सकता। शिक्षा को उन्होंने सामाजिक समरसता कहा है। शिक्षा व्यक्ति में सात्विक गुणों का विकास करती है।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी ने शिक्षा संबंधी विचारों पर कई पुस्तकें और लेख लिखे. इतना ही नही उन्होंने शिक्षा पर अनेक भाषण भी दिए है। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि, शिक्षा व्यक्ति का बौध्दिक करती है, इस कारण उन्होंने शिक्षा की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से व उनके उद्देश्यों की व्यापक चर्चा भी करते है। उनका कहना था

कि, व्यक्ति निर्माण में शिक्षा का अमूल्य योगदान होना चाहिए। समाज के लिए संस्कारित व चरित्रवान सद्गुणयुक्त सज्जन व्यक्तियों की परम आवश्यकता रहती है। क्योंकि संस्कारखाण व चरित्रवान व्यक्ति ही सबल समाज का निर्माण कर सकेगा। बाबासाहब के अनुसार विभिन्न वर्गों में बटे समाज में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता व लोक तांत्रिक मुल्यों का संरक्षण संभव है। यदि समाज में समरसता व जीवन मूल्यों का संरक्षण नही होगा तो हम आदर्श समाज की स्थापना नही कर सकेंगे। "बाबासाहब प्रचलित शिक्षा व शिक्षण पद्धति को बदलना चाहते थे। उनका मानना था कि समरसता निर्माण करनेवाली व लोकतांत्रिक मूल्यों की भावना का विकास करनेवाली शिक्षा व पाठ्यक्रम ही पढ़ाया जाना चाहिए। उनका यह दृढमत था कि समाज में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए व जिसकी समय के अनुकूल आवश्यकता है। वे मानते थे की शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिए जिससे बालक में रूचि से पढने का स्वभाव निर्माण हो। विदेशी भाषा में पढ़नेवाले निर्माण हो। विदेशी भाषा में पढ़नेवाले व्यक्ति का समुचित विकास हो पायेगा, ऐसी उनके मन में शंका थी।"।

शिक्षा एक आंदोलन है। अगर शिक्षा उपर्युक्त लक्ष्यों को पूरा नही करती तो वह निरर्थक है। डॉ.आंबेडकर के स्पष्ट विचार थे कि जो शिक्षा आदमी को योग्य न बनाए, समानता और नौतिकता न सिखाए, वह सच्ची शिक्षा नही है, सच्ची शिक्षा तो समाज में मानवता की रक्षा करती है, आजीविका का सहारा बनती है, आदमी को ज्ञान और समानता का पाठ पढ़ाती है। सच्ची शिक्षा समाज में जीवन का सृजनकरती है।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर को राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में उनके लेखन का योगदान महत्वपूर्ण है। उनको एक समाजसुधारक और महानायक रूप में सिर्फ दलित समाज ही देख रहा था। शिक्षा विभाग महाराष्ट्र सरकार द्वारा डॉ.आंबेडकर के लेखन और भाषणों को संकलित कर 21 भागों में प्रकाशित किया गया है। हिंदी में उन्होंने 'शुद्रो की खोज', 'बुध्द या कार्ल माक्र्स', 'धर्मांतरण क्यों', 'हिंदू नारी का उत्थान और पतन', 'हिंदू धर्म की रिडल', 'बुध्द और उनका धर्म', 'जातिभेद का उच्छेत', 'रानडे गांधी और जिन्ना', 'प्राचीन भारतीय वाणिज्य' आदि किताबें लिखी। जहाँ एक शिक्षा संबंधी लेखन का प्रश्न है, वह उन्होंने बहिष्कृत हितकारिणी सभा की ओर से भारतीय संविधिक आयोग मुंबई में दलित वर्ग की शिक्षा की स्थिति के बारे में वक्तव्य दिया। उनके शिक्षा संबंधी विचारों को 'डॉ.आंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय भाग-3, भाग-4, भाग-19 में संकलित किया गया है। डॉ.आंबेडकर ने शिक्षा के लिए सरकार का अनुदान बढ़ाने की वकालत की और वंचित तबकों के लिए सस्ती शिक्षा का पक्ष लिया। डॉ.आंबेडकर से पहले महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले जौसे समाजसुधारक ने स्त्री शिक्षा के द्वार खोले और गुलामगिरी जौसी पुस्तक लिखकर वर्णवादियों पर कडा प्रहार किया था। डॉ.आंबेडकर के नेतृत्वसमझते हुएसंविधान लिखने की जिम्मेदारी सौंपी गई। वे देश के पहले कानून मंत्री थे। डॉ.बाबासाहब के विचार उत्तरोत्तर आजादी के हर बढ़ते वर्ष के साथ ज्यादा प्रासंगिक होते गए। डॉ.आंबेडकर भारतीय शिक्षा के बारे में बहुत चिंतित थे। शिक्षा के विषय में देश ने कुछ खास प्रगति नही की थी। उस समय की भारत सरकार ने शिक्षा के बारे में जो रिपोर्ट पेश की वह बड़ी चिंताधारक थी। उस रिपोर्ट के

अनुसार शिक्षा के विकास में 40-300 वर्ष लगनेवाले थे। इसपर आंबेडकर जी ने सुझाव दिया कि, "हमारे पास इस प्रेसिडेंसी में दो विभाग है, जो मेरे अनुसार एक दूसरे से उल्टा काम कर रहे थे। हमारे पास शिक्षा विभाग है,जिसका काम लोगों को नौतिकता सिखाना और उनको समाज में लायक बनाना है। दूसरी ओर हमारे पास उत्पाद शुल्क विभाग है, जो मेरे विचार से एकदम विपरीत दिशामें काम कर रहा है। महोदय मेरे विचार से मेरी मांग बड़ी नही है, अगर मौ कहूँ कि हम शिक्षा पर क्रम से कम उतनी राशी तो खर्च करें ही, जितनी हम लोगों से उत्पाद शुल्क के रूप में लेते है। हम इस प्रेसिडेंसी में शिक्षा पर प्रति व्यक्ति 14 आना खर्च करते है। मेरे विचार से यह न्यायचित होगा कि शिक्षा पर हमारा खर्च इस प्रकार तय किया जाए कि हम लोगों की शिक्षा पर उतना खर्च करें जितना उनके लेते है।"2 आज जब हम शिक्षा निती देखते है तो उसके बजट के लिए हमें आंदोलन करना पडता है। ऐसी सूरत में हमें डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के विचार निश्चय ही दिशा निर्देश करनेवाले साबित हो सकते है।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी भारतर के शिल्पकार के साथ-साथ एक एक महान शिक्षक भी रहे। उनके अनुसार शिक्षा से ही ज्ञान का ताला खुलता है। और इसलिए उन्होंने अपने समाज को शिक्षित होने लिए अव्हान किया। उन्होंने अपने समाज में स्वाभिमान और चेतना निर्माणा करने के लिए शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देने के लिए बल दिया। वे एक दुरदर्शी शिक्षक की भांति विचार करते थे। उनका कहना था कि बालक बालिकाओं की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाए ताकि आनेवाले अच्छे समाज का निर्माण हो सके। वे शिक्षा को जीवन निर्वाह का माध्यम नही बल्कि क्रांति का प्रमुख माध्यम मानते थे।

शिक्षा द्वारा ही अंधविश्वास, अज्ञानता, अन्याय और शोषण के विरुध्द आवाज बुलंद की जा सकती है। बाबासाहब ने भी विश्व के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से शिक्षा ग्रहण कर एक स्वाभिमानी और प्रतिष्ठित व्यक्ति बने। मनुष्य को जिवित रहने के लिए अन्न की आवश्यकता होती है। ठिक वौसी ही ज्ञानर्जन के लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। मनुष्य के आत्मसम्मान की रक्षा का भाव निर्माण शिक्षा के बिना संभव नही है।

डॉ.आंबेडकर जी शिक्षा पर जो खर्च होता है उसके बारे में भी अपने विचार व्यक्त किए है। वे कहते है, "हम इस समय शिक्षा पर तो खर्च रहे है, उसके अधिकांश भाग का वास्तव में अपव्यय हो रहा है। प्राथमिक शिक्षा का उद्‌वेश्य यह है कि प्राथमिक विद्‌यालय में दाखिल होनेवाला हर बच्चा स्कूल तभी छोडे, जब वह साक्षर हो जाए और अपने शेष जीवन में वह साक्षर बना रहे। लेकिन हम आंकडों पर नजर डाले तो हमें पता चलेगा कि प्राथमिक स्कूलों में होनेवाले हर एक सौ बच्चों में से केवल 18 बच्चे ही कक्ष चार तक पहुँचते है, शेष बच्चे, यानी 100 में से 82 बच्चे पुन: निरक्षरता की दुनिया में चले जाते है।"3

डॉ.बाबासाहब का ध्यान समाज के निचले तबकों पर अधिक था। इसलिए वे इस संदर्भ में यह कहना नही भूलते कि 'अब हम इस स्थिति में आ गए है, जब समाज के निचले तबके के लोगों के बच्चे हाईस्कूल, मिडिल स्कूल और कालिजों में जा रहे है। इसलिए इस विभाग की नीति यह होनी चाहिए कि निचले वर्गों के लिए उच्च शिक्षा को जितना संभव हो, सस्ता बनाया जाए। आंबेडकर दलितों की शिक्षा के प्रति हमेशा चिंतित रहे। उन्होने अपने कार्यों से आधुनिक भारत के इतिहास को गहराई से प्रभावित किया। लेकिन उनके योगदान का

ज्ञान की विविध शाखाओं में उचित मुल्याकंन नही किया गया, खासकर शिक्षा के क्षेत्र में। आंबेडकरजी ने शिक्षा को प्राथमिकता दी और पिछडे वर्गों के बीच उच्च शिक्षा और संस्कृति के विस्तार हेतु कॉलेज, होस्टेल, पुस्तकालय, सामाजिक केंद्र और अध्ययन केंद्र खोले। सभा के निर्देशन और मार्गदर्शन में विद्‌यार्थियों की पहल पर 'सरस्वती बेलास' नाम पत्रिका का प्रकाशन किया। अनेक जगह छात्रावास खोले। समाज के पिछडे तबकों के बीच उच्च शिक्षा फैलाने के लिए लोक शौक्षिक समाज की स्थापना की। लोक शौक्षिक समाज ने दलितों के बीच उच्च शिक्षा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ.आंबेडकर जी का सोंचना था कि, पिछडे वर्ग के लोगों का जीवन सार उठाने का सबसे महत्वपूर्ण अस्त्र शिक्षा ही है। उन्होंने नारा दिया था, "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करें। दलितोत्थान के लिए अन्य क्षेत्रों में उनके अभूतपूर्व योगदान की वजह से उनके शिक्षा संबंधी विचारों का सही मुल्याकंन नही हो पाया। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो सिध्दांत निर्माण किए उसे अपनी शौक्षणिक संस्थाओं में व्यावहारिक धरातल पर लागू किया। डॉ.आंबेडकरजी के शब्दों में "शिक्षा वह है जो व्यक्ति को निडर बनाए, एकता का पाठ पढ़ाए, लोगों को अधिकारों के प्रति सचेत करें संघर्ष की सीख दे और आजादी के लिए लडना सिखाए।" शिक्षा एक आंदोलन है। अगर शिक्षा हमारे लक्ष्यों को पूरा नही करती तो वह निरर्थक है। जो आदमी को योग्य न बनाए, समानता और नौतिकता न सिखाए, वह सच्ची शिक्षा नही है, वह सच्ची शिक्षा नही है, सच्ची शिक्षा तो समाज में मानवता की रक्षा करती है, आजीविका का सहारा बनती है। आदमी को ज्ञान और समानता का पाठ पढाती है। सच्ची शिक्ष समाज में जीवन का सृजन

करती है। डॉ.आंबेडकर के समाज दर्शन में मानवीय गरिमा और सम्मान का स्थान सर्वोपरी है। शिक्षा के माध्यम से वे समाज में न्याय, समानता, भाईचारा, स्वतंत्रता और निर्भयता के स्थान पर मूल्याधारित समाज बनाना चाहते थे। यह सच भी है कि नैतिक मूल्यों का विकास अच्छी शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। आंबेडकर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य वही है जो स्वयं उनके जीवन और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचारों में है। वे हमेशा तार्किक और वैज्ञानिक शिक्षा के पक्षधर रहे। डॉ.आंबेडकर ने हमेशा पूर्ण एवं अनिवार्य शिक्षा का पक्ष लिया और तकनीकी शिक्षा पर बल दिया। वे कमजोर वर्गों को विभिन्न प्रकार का छात्रवृत्तियाँ देने के पक्षधर थे। उच्च शिक्षा की जरूरत को भी वे बराबर रेखांकित करते रहते थे। भारतीय समाज में महिलाओं की खराब स्थिति के लिए वे ब्राम्हणवाद के जिम्मेदार मानते थे। इस संबंध में वे कहते है - "इस समाज में ऐसी कोई बुराई नही है जो ब्राम्हणों के सहयोग के बिना पनपी हो। स्त्री को दोयम दर्जा देना, विधवा को पूनर्विवाह से रोकना, पती के साथ सती जाना यह सब ब्राम्हणवाद की देने है। ब्राम्हणों की वजह से ही विधवाओं को पूनर्विवाह से रोका गया। लड़कियों का विवाह 8 से भी कम की उम्र पर कर दिया जाता था और मर्दो को हर उम्र में मनचाहे विवाह करने का अधिकार था।"4 ऐसा माना जाता है कि वौदिक युग में महिलाओं को काफी अधिकार प्राप्त थे। इसके बाद लगातार उनकी स्थिति गिरती चली गई। महिलाओं के संबंध में एक क्रांतिकारी कदम उठाकर समाज में समान अधिकार दिलाने की वकालत की। उन्होंने महिलाओं के लिए व्यक्तिगत गरिमा और अपने विकास के लिए उचित अवसर उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने हिंदू विवाह

अधिनियम के तहत स्त्रियों को संपत्ति के अधिकार एवं उत्तराधिकार के अधिकार का प्रावधान किया। वे स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता के पक्षधर थे। हिंदू बिल पास करने के कड़े विरोध के बावजूद आंबेडकर ने यह बिल पास कराकर समानता के लिए किए जा रहे महिला संघर्ष के इतिहास की यह 20वी सदी की सबसे बड़ी जीत थी। इस प्रकार आंबेडकरजी भारत में महिलाओं के सबसे बड़े हितैषी के रूप में सामने आते है।

महिलाओं की शिक्षा और उनके व्यक्तित्व विकास के बारे में डॉ.आंबेडकर के विचार तत्कालीन समाज के चल रहे स्त्री मुक्ति आंदोलनों से किसी भी मामले में कम नही थे। वे महिलाओं को अनिवार्य शिक्षा के पक्ष में थे। उन्होंने महिलाओं के विकास और आत्मनिर्भरता के लिए संविधान में कई जरुरी प्रावधानों को शामिल किया जिससे कि आजाद में स्त्री समानता के लिए मजबुती से अपना दावा पेश कर सके।दलित विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में प्रगति के बारे में डॉ.आंबेडकर का कहना था, "विज्ञान और इंजिनियरी में शिक्षा ने कोई प्रगति नही की है।" कला और विधि के विषय में शिक्षा अनुसूचित जातियों को विज्ञान तथा टेक्नॉलोजी में उन्नत प्रकार की शिक्षा अधिक सहायक होगी।"5 उन्होंने कहा कि भारत सरकार को कुछ ऐसे उपाय करने चाहिए जिससे अनुसूचित जातियों के विद्यार्थी भी उसका लाभ उस सके। दलित विद्यार्थियों के लिए विज्ञान और तकनिकी शिक्षा लेनना महंगा होने की वजह से आंबेडकर जी ने दलित विद्यार्थियों के लिए छात्रकृति की व्यवस्था किये जाने की मांग की। उन्होंने कहा, " सरकारी सहायता के बिना विज्ञान और टेक्नॉलोजी की उन्नत शिक्षा का क्षेत्र कभी भी अनुसूचित जातियों के

सुलभ नही होगा और यह केवल न्यायसंगत तथा उचित है कि केंद्रिय सरकार इस संबंध में उनकी सहायता के लिए आगे आये।"आंबेडकर शिक्षा के साथ स्वच्छता, शारीरिक शिक्षा व सांस्कृतिक विकास को अहम मानते थे। उनका मानना था कि प्राथमिक शिक्षा बच्चे में सभ्यता और संस्कृति का इस तरह विकास करे कि उसे सभ्य समाज का हिस्सा बनने में आसानी हो। डॉ.आंबेडकर का मत था कि एक लोकतांत्रिक व समाजवादी राष्ट्र बनाना है तो उसके लिए सभी के लिए समान शिक्षा बेहद जरुरी है। डॉ.आंबेडकर ने उच्च शिक्षा पर अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये है। उनके उच्च शिक्षा संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है।

डॉ.आंबेडकर के विचार आज न केवल दलित समाज के लिए बल्कि पूरे भारतीय समाज के लिए बहुत उपयोगी है। आंबेडकरजी ने हर दम बैठक में उच्च शिक्षा पर खर्च बढ़ाने की बात कही है। उच्च शिक्षा पर आंबेडकरजी ने काफी विचार व्यक्त किए, उनके वे विचार आज भी प्रासंगिक है। भारतीय इतिहास में दलितों के लिए शिक्षा और रोजगार का मार्ग प्रशस्त करनेवाले, उनके अधिकारों को जागरूक बनानेवाले, शोषण से मुक्त करानेवाले तथा बुध्दि के क्षेत्र में भी अपनी श्रेष्ठता साबित करनेवाले एकमात्र आंबेडकर ही है। उन्होंने शिक्षा के बारे में अपनी स्पष्ट बात रखी और इसी प्रक्रिया में उनकी दलित-समाज की शिक्षा के लेकर चिंताएँ भी प्रकट हुई।भारतीय संविधान में उन्होंने जो प्रावधान किए है उसमें दलितों और वंचितों को शिक्षा और रोजगार से जोडने में मदत, शौक्षिक रूप से पिछडे लोगोंके को विशेष प्रावधान बनाया। अस्पृश्यका निवारण किया तथा प्रत्येक व्यक्ति को समानता का दर्जा दिलाया तथा सरकारी शिक्षण

संस्थाओं में कमजोर समुदायों को प्रवेश का मार्ग खूला कराया। पुरूष और महिलाओं को समान काम और जीवनाधिकार का प्रावधान किया। तरह डॉ.आंबेडकर से ही दलितों की शिक्षा व रोजगार को लेकर चिंतित रहे। दलित समाज के लिए उनके विचार आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण है और आगे भा रहेगें।

संदर्भ :-

1) आंबेडकर बी.आर. 1979 डॉ.आंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेस, वाल्युम-1. एज्युकेशन डिपार्टमेंट,गव्हरमेंट ऑफ महाराष्ट्र, मुंबई।
2) बाबासाहेब डॉ.आंबेडकर. संपूर्ण वाड्मय खंड-3. पृ.55-56.
3) वही
4) आंबेडकर बी.आर. 1987. डॉ.आंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेस. वाल्युम-3, गव्हरमेंट ऑफ महाराष्ट्र..
5) वही 1994-95
6) बाबासाहब डॉ.आंबेडकर संपूर्ण वाड्मय (भाग-4)
7) वही वही भाग-19.